E-Learning material prepared by Dr.Abha Jha, Asst.Prof.&Head, University Dept. of Philosophy, Dr.Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi, Jharkhand.

उपनिषदों में ब्रह्म विचार

Dr.Abha Jha
Asst.Prof.&Head
Dept. of Philosophy
DSPMU,Ranchi

Abha Jha

उपनिषद या आरण्यक वेद के अंतिम भाग हैं . इन्हें आरण्यक कहा जाता है क्योंकि इनका चिंतन अरण्य या वन के एकांत वातावरण में होता था. ये वैदिक साहित्य के अंतिम भाग हैं अतः इनका नाम वेदांत भी है. उपनिषद का शाब्दिक अर्थ है, शिष्य का गुरु के नजदीक उपदेश के लिए श्रद्धा के साथ बैठना .उपनिषदों का मुख्य विषय आध्यात्मिक तत्त्व है. आत्मज्ञान, मोक्ष ज्ञान, और ब्रह्म ज्ञान की प्रधानता होने के कारण इसे आत्मविद्या, मोक्ष विद्या और ब्रह्म विद्या भी कहा गया है. ये अध्यात्म के भंडार हैं .उपनिषदों की संख्या 108 मानी जाती है. इनमें 10 उपनिषद ही सबसे मुख्य है-ईश, केन,कठ,प्रश्न,मुण्डक,माण्डुक्य,तैत्तिरीय ,ऐतरेय ,छान्दोग्य एवं वृह्दारण्यक . वैदिक धर्म बहिर्मुखी है जबकि उपनिषदों की प्रवृति अंतर्मुखी है.भारतीय दर्शन के स्रोत उपनिषद् ही हैं.

उपनिषदों में परम तत्व का विचार-

परम तत्व का विषय उपनिषद में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है. यह परम तत्व ही परम सत्य है जो सभी वस्तुओं का मूल आधार है. परम तत्व के प्रश्न का उत्तर उपनिषदों में दो दृष्टिकोण से बताया गया है- बाह्य और आंतरिक. बाह्य दृष्टि से ब्रह्म ही परम तत्व है तथा आंतरिक दृष्टि से आत्मा परम तत्व है. बाह्य और आंतरिक में वस्तुतः

भेद नहीं है. आत्मा और परमात्मा वस्तुतः एक ही परम तत्व के दो नाम हैं .जीव और ब्रह्म में अभेद है.

ब्रह्म विचार-

उपनिषदों के अनुसार ब्रहम ही परम सत्य है. यह अद्वैत रूप है.' ब्रह्म' शब्द 'वृह' धातु से बना है जिसका अर्थ है , बढ़ना या विकसित होना .इसी से विश्व उत्पन्न हुआ है. यह विश्व की उत्पत्ति ,स्थिति और विनाश का कारण है. यह सभी वस्तुओं का परम कारण है. सृष्टि की उत्पत्ति के समय ईश्वर अर्थात ब्रह्म ने प्रत्येक सृष्ट पदार्थ में प्रवेश किया और उसके बाद उसने स्वयं सत् और असत ,नित्य और अनित्य सभी रूप धारण कर लिए. ब्रह्म के अतिरिक्त किसी की सत्ता नहीं है. कठोपनिषद के अनुसार जो सृष्टि में एक तत्व को देखता है वही ज्ञानी है. जगत को उत्पन्न करने की शक्ति ब्रह्म में ही है. ब्रह्म सर्वशक्तिमान है . वह सर्वव्याप्त होने के कारण सर्वभूमा कहलाता है . मुंडकोपनिषद में ब्रह्म की सत्ता सिद्ध करने के लिए उदाहरण देते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार मकड़ी जाले को बनाती है और निगल जाती है उसी प्रकार अक्षर ब्रह्म से विश्व उत्पन्न होता है

ब्रह्म के लिए 'तज्जलान ' शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ ब्रह्म से ही जगत की उत्पत्ति, उसी में स्थिति और उसी में लय है. वह संसार की सभी शक्तिओं का अधिष्ठान रूप है. सभी सांसारिक शक्तियां ब्रह्म की आंशिक अभिव्यक्ति हैं. ब्रह्म को 'प्रकाशपुंज' कहा गया है. सूर्य ,चंद्रमा ग्रह ,नक्षत्र सभी ब्रह्म की ही ज्योति से प्रकाशित होते हैं तथा ब्रह्म के आदेश से ही सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, आकाश और सम्पूर्ण जगत अपने स्थान और अपने स्वरूप में स्थित रहते हैं.

ब्रह्म के स्वरूप-

उपनिषदों में ब्रह्म के दो स्वरूप माने गए हैं- पर ब्रह्म और अपर ब्रह्म , निर्गुण और सगुण. पर ब्रह्म निर्गुण,निर्विशेष ,निष्प्रपंच,और निरूपाधि है.यह देश काल से परे है. उपनिषदों में इसका अभावात्मक वर्णन ही किया गया है. अपर ब्रह्म सगुण,सविशेष, सोपाधि ईश्वर है .परब्रह्म को ब्रह्म और अपर ब्रह्म को ईश्वर कहा गया है . वस्तुतः ये एक ही ब्रह्म के दो पक्ष हैं.

निर्गुण ब्रह्म- निर्गुण ब्रह्म का वर्णन किसी विशेषण के द्वारा नहीं किया जा सकता. इसका केवल निषेधात्मक वर्णन ही उपनिषदों में उपलब्ध होता है. हम ब्रह्म के विषय में केवल यह कह सकते हैं कि वह क्या नहीं है,हम यह नहीं कह सकते कि वह क्या है . ब्रह्म की व्याख्या करते हुए बृहदारण्यक उपनिषद में कहा गया है- वह

Abhijna

न स्थुल है, ना सूक्ष्म है, न ह्रस्व है ,न दीर्घ है, न रक्त है, न द्रव्य है, न छाया है, न तम है, न वायू है न आकाश है. उसमें न रस है ना गंध है, न उसके नेत्र है , न स्रोत हैं, न वाणी है न मन है, न तेज है ,न प्राण है, न मुख है. उसमें न अंदर है न बाहर है. वह कुछ भी नहीं खाता, उसे कोई भी नहीं खाता इत्यादि.'' निर्गुण ब्रह्म का परिचय उपनिषदों में 'नेति नेति' कह कर दिया गया है . शब्दों के द्वारा उसका वर्णन नहीं किया जा सकता. उपनिषदों में कहा गया है -"जो वाणी से प्रकाशित नहीं होता किंतु जिससे वाणी प्रकाशित होती है, जो मन से मनन नहीं किया जाता किंतु जिससे मन मनन करता है." इस प्रकार ब्रह्म के निषेधात्मक वर्णन के द्वारा ब्रह्म के पूर्ण भाव का पता चलता है क्योंकि ब्रह्म अनिर्वचनीय है और अलक्षण है क्योंकि कोई भी लक्षण उसे बताने में समर्थ नहीं है, वह सत् असत् की परिधि के परे है.इस प्रकार ब्रह्म को बुद्धि की सभी कोटियों से परे बताया गया है. किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि उसका ज्ञान संभव नहीं .वह शुद्ध ज्ञान है. मन, बुद्धि और इंद्रियों के साधनों से उसका ज्ञान संभव नहीं.

सगुण ब्रह्म-

ईश्वर को सगुण ब्रह्म कहा गया है. यह विशेष नहीं बल्कि सविशेष है. सगुण ब्रह्म के दो लक्षण बताए गए हैं- स्वरूप लक्षण और तटस्थ लक्षण.' ब्रह्म सत्य, ज्ञान ,अनंत स्वरूप है' यह स्वरूप लक्षण है तथा 'ब्रह्म से सभी जीव उत्पन्न होते हैं' यह ब्रह्म का तटस्थ लक्षण है. ब्रह्म ही जगत का निमित्त(निर्माण करने वाला) है और उपादान(वस्तु) है.. बृहदारण्यक उपनिषद में कहा गया है कि ईश्वर विश्व के भीतर निवास करता है और विश्व का शासन करता है. अग्नि, अंतरिक्ष ,वायु, स्वर्ग ,सूर्य, चंद्रमा ,दिशाएं ,नक्षत्र ,आकाश ,तेज आदि सभी में ईश्वर ही व्याप्त है और वह सभी का अंतर्यामी है.अपर या सगुण ब्रह्म उपासना का विषय है.उसे ईश्वर(god) कहा गया है.

इस प्रकार उपनिषद में ब्रह्म के निर्गुण और सगुण दोनों रूपों की व्याख्या की गई है. ब्रह्म नित्य, निराकार आनंद स्वरूप है. चैतन्य होने के कारण उसे मात्र चित् कहा गया है. सगुण रूप में ब्रह्म ही परमात्मा है तथा जगत का निमित्त एवं उपादान कारण दोनों है

पर और अपर,निर्गुण और सगुण ब्रह्म में अंतर-

ब्रह्म के दो स्वरूप माने गए हैं. परब्रह्म एक अनंत और अद्वैत रूप है तथा यह दार्शनिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण माना गया है परंतु परब्रह्म से सृष्टि की व्याख्या

Anjana

नहीं हो पाती तथा धार्मिक दृष्टि के बिना भगवान और भक्त के द्वैत की व्याख्या नहीं हो पाती. अतः अपर या सगुण ब्रह्म जगत के उपादान,पालक और संहारक रूप में धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है. शंकराचार्य तथा रामानुज का मुख्यतः यही भेद है. परब्रह्म वर्णनातीत ' नेति नेति' है तथा अपर ब्रह्म 'इति इति' रूप में भगवान के रूप में वर्णनीय है.

.....

AbhaJha